आमुख कथा

ज्ञान एकमात्र क्रांति है

प्रश्न : कल आपने कहा, हम कहां हैं, सत्व, तमस या रजस में, यह हमें ही खोजना होगा। और यह कि साधक के लिए यह जरूरी है। पर मुझे तो कुछ पता नहीं चलता कि मैं कहां हूं?

अगर पता न चले कहां हो, समझना तमस में हो। अगर धुंधला-धुंधला पता चले, कुछ-कुछ पता चले, कुछ-कुछ न चले, समझना रजस में हो। अगर साफ-साफ पता चले, समझना कि सत्व में हो।

घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं। सौ में निन्यानबे लोग तमस में हैं। यह स्वाभाविक है। तमस में हम पैदा हुए हैं, अंधकार में। तमस में हम बड़े हुए हैं। अंधकार हमारी स्थिति है। वह हमारी नियति नहीं है, वह हमारी स्थिति है। वह हमारी मंजिल नहीं है, लेकिन हमारा आज का होने का क्षण उसी में है। बड़ी अमावस की रात है।

लेकिन इससे कुछ न तो हताश हो जाने की जरूरत है, क्योंकि जितनी अंधेरी रात हो, उतनी ही सुंदर सुबह होती है। रात को रात की तरह जानने से ही तुम तमस के बाहर उठने शुरू हो जाते हो।

अगर पता न चलता हो कहां हो, तो समझना कि तमस में हो, क्योंकि अंधेरे में ही पता नहीं चलता कि कहां हैं।

घबड़ाना मत इससे कि तमस में हैं, अब क्या होगा! यह जान लिया कि तमस में हैं, तो तुम तमस के पार उठने ही लगे। जान लिया कि नींद में हैं, नींद टूटने ही लगी। जान लिया कि पागल हूं, पागलपन हटने ही लगा।

जानना बड़ी भारी क्रांति है। कृष्णमूर्ति निरंतर कहते हैं, ज्ञान एकमात्र क्रांति है। है भी। क्योंकि जिस चीज को भी तुम जान लो, उसी में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जाते हैं।

जिस व्यक्ति ने जान लिया, मैं आलसी हूं, आलस्य टूटने लगा। क्योंकि यह जानना भी आलसी को संभव नहीं है। आलसी कभी अपने को आलसी नहीं मानता। तामसी कभी अपने को तामसी नहीं मानता। तुम कहो, तो लड़ने को खड़ा हो जाएगा। और सौ में निन्यानबे लोग तामसी हैं।

यह स्वाभाविक है। तामसी न होते, तो बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते। अंधेरे में हैं। अभी रोशनी का दीया नहीं जला।

अगर तुम्हें समझ में आने लगे कि तुम तामसी हो, तो दूसरी दशा पैदा होगी जो राजस की है। कुछ-कुछ समझ में आएगा, कुछ-कुछ समझ में नहीं आएगा। कभी ऊपर उठ आओगे, कभी डुबकी मार जाओगे; कभी अंधेरे में दब जाओगे; कभी घड़ीभर को ऊपर आ जाओगे।

किसी को नदी में डूबते देखा है? बाहर निकलता, भीतर जाता, बाहर निकलता। वैसी दशा होगी। जब बाहर आओगे, तब कुछ-कुछ साफ मालूम होगा। जब डूबोगे, तब सब सीमाएं खो जाएंगी।

लेकिन ठीक से अपनी स्थिति को समझ लेना बहुत जरूरी है, क्योंकि वहीं से काम होगा शुरू। तुम हो तमस में और समझो कि सत्व में हो, तो तब तुम कभी काम न कर सकोगे। तुम थे बीमार और समझा कि स्वस्थ हो, तो इलाज कैसे होगा! तुम चिकित्सक के पास ही न जाओगे।

इसलिए तो बहुत लोग गुरु की खोज नहीं करते। जरूरत नहीं है। वे मानते हैं कि उन्हें ज्ञान है ही। वे मानकर ही चलते हैं कि अब और कुछ जानने को शेष नहीं है। जानने योग्य सब उन्होंने जान लिया है। किससे पूछना? किसके पास जाना? किसलिए जाना?

जब तुम किसी की खोज में जाते हो, तो स्वभावतः भीतर एक स्थिति आ गई है, जब तुम्हें लगता है कि तुम नहीं जानते हो।

तमस की स्थिति है। उसके प्रति होश से भर जाओ, उसे छिपाओ मत। छिपाने से कोई बीमारी कभी मिटती नहीं, बढ़ती है। घाव को दबाओ मत, उघाड़ो, खुली रोशनी में रखो, हवाओं को छूने दो, घाव भरता है। सूरज को खेलने दो घाव के ऊपर, घाव भरता है। उसे ढांको मत, छिपाओ मत, अन्यथा और सड़ेगा। जो छोटा-मोटा घाव था, वह नासूर हो जाएगा। जो नासूर था, वह कभी कैंसर हो जाएगा। छिपाओ मत। बीमारी छिपाने से मिटती नहीं।

लेकिन हम सब बीमारी को छिपाते हैं और झूठे स्वास्थ्य को प्रकट करते हैं। तो बीमारी बढ़ती जाती है और तुम भीतर सड़ते जाते हो। जीवन एक लंबी सड़ांध हो जाती है।

उघाड़ो; अपने को वैसा ही जानो, जैसे हो। यह सत्य का पहला कदम हुआ। पहले धुंधलका रहेगा; कुछ जागे, कुछ सोए। चेष्टा जारी रहेगी, धुंधलका भी मिट जाएगा। जागे ही जागे; तब सत्व का जन्म होगा।

— ओशो
गीता दर्शन, भाग-आठ
अध्याय-18, प्रवचन-10, प्रश्न-3
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)